प्रकृति माँ और उसके पाँच बच्चे

Saurabh Dubey

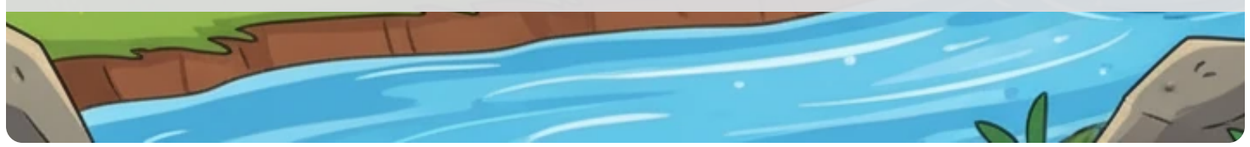

प्रकृति माँ अपने राजसी दरबार में बैठी हैं, उनके चारों ओर बारह महीनों के प्रतीक, जैसे खिले हुए फूल और घूमते ऋतु चक्र, सजे हुए हैं। उनकी आँखों में प्रेम और ज्ञान की चमक है। वह अपने विशाल साम्राज्य के महीनों को अपने पाँच प्रिय बच्चों में बाँटने वाली हैं।

हरे वस्त्र पहने नटखट बालक समीर, वायु का प्रतीक, एक पवन
घेरे के साथ खेल रहा है। उसका सिंहासन यकृत-पित्ताशय का प्रतीक
जो जीवन के आरंभिक वर्षों का प्रतिनिधित्व करता है। फाल्गुन और चै
के महीने उसके राज्य में आते हैं, जो 0 से 12 वर्ष तक के बचपन क
समय है। उसकी तन्मात्रा हमारी त्वचा है, और शनि, राहु और केतु उस
शरारती मित्र हैं।

लाल-नारंगी वस्त्रों में अग्नि, पावक का प्रतीक, एक बहादुर योद्ध युवती के रूप में खड़ी है। वह अग्नि की ज्वाला से घिरी हुई है, जो उस उत्साह और ऊर्जा को दर्शाती है। उसका सिंहासन हृदय-छोटी आंत व प्रतिनिधित्व करता है, जो 13 से 30 वर्ष तक की युवावस्था का प्रतीव है। ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने उसके राज्य हैं, और उसकी तन्मात्रा हम आँखें हैं। मंगल और सूर्य उसके शक्तिशाली मित्र हैं।

पीले वस्त्रों में पृथ्वी, क्षिति का प्रतीक, एक धैर्यवान पुत्री के रूप
बैठी है। उसके हाथों में अन्न और मिट्टी है, जो पोषण और स्थिरता के
दर्शाते हैं। उसका सिंहासन आमाशय-प्लीहा का प्रतीक है, जो 31 से
45 वर्ष तक के परिपक्वता काल को दर्शाता है। भाद्रपद और आश्विन
महीने उसके राज्य हैं, और हमारी जिह्वा उसकी तन्मात्रा है। बुद्धिमान बु
उसकी सबसे अच्छी मित्र है।

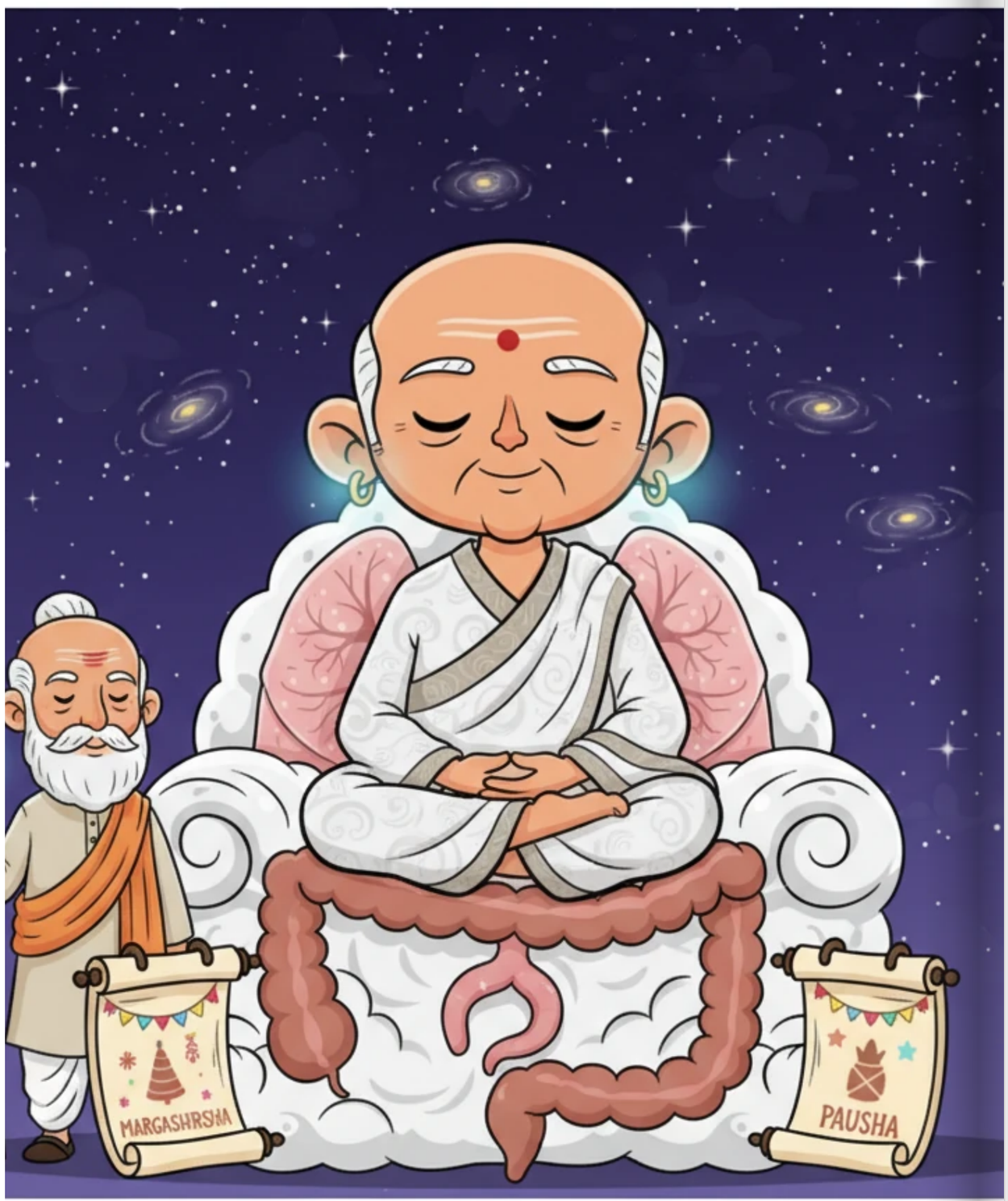

सफेद-भूरे वस्त्रों में आकाश, गगन का प्रतीक, एक शांत साधु वे
रूप में ध्यानमग्न है। उसके पीछे तारों भरा अनंत आकाश फैला हुआ है
जो ज्ञान और शांति को दर्शाता है। उसका सिंहासन फेफड़े-बड़ी आंत व
प्रतिनिधित्व करता है, जो 46 से 60 वर्ष तक की वृद्धावस्था के पहले
चरण का प्रतीक है। मार्गशीर्ष और पौष के महीने उसके राज्य हैं, और
कान उसकी तन्मात्रा हैं। ज्ञानी गुरु उसका मार्गदर्शक मित्र है।

नीले वस्त्रों में जल, पानी का प्रतीक, एक वृद्ध पुरुष के रूप में बै
है। उसके हाथ में जल का कलश है, जिससे जीवनदायी अमृत बह रहा है।
उसका सिंहासन गुर्दे-मूत्राशय का प्रतीक है, जो 61 से 100 वर्ष तक
के जीवन के अंतिम चरण को दर्शाता है। पौष और माघ के महीने उस
राज्य हैं, और हमारी जीभ उसकी तन्मात्रा है। शुक्र और चंद्र उसके शां
मित्र हैं।

हरे-भरे खेतों में समीर, नटखट बालक, हवा के झोंकों से फूलों व
नचा रहा है और पेड़ों की पत्तियों से सरसराहट की धुन बजा रहा है। छ
बच्चे उसके चारों ओर हंसते हुए दौड़ रहे हैं, उसकी तरोताजा ऊर्जा क
आनंद ले रहे हैं। उसकी त्वचा पर हल्की हवा महसूस होती है, जो जीव
के शुरुआती उत्साह को दर्शाती है।

अग्नि की सुनहरी चमक और पृथ्वी की उपजाऊ मिट्टी से एक विशाल, रंगीन बगीचा खिल उठा है। योद्धा युवती अग्नि अपने तेज से पौधों को ऊर्जा दे रही है, जबकि धैर्यवान पृथ्वी उन्हें सहारा दे रही है। उनकी संयुक्त शक्ति से फल और फूल भरपूर हैं, जो युवावस्था की वृद्धि और परिपक्वता के पोषण का प्रतीक हैं।

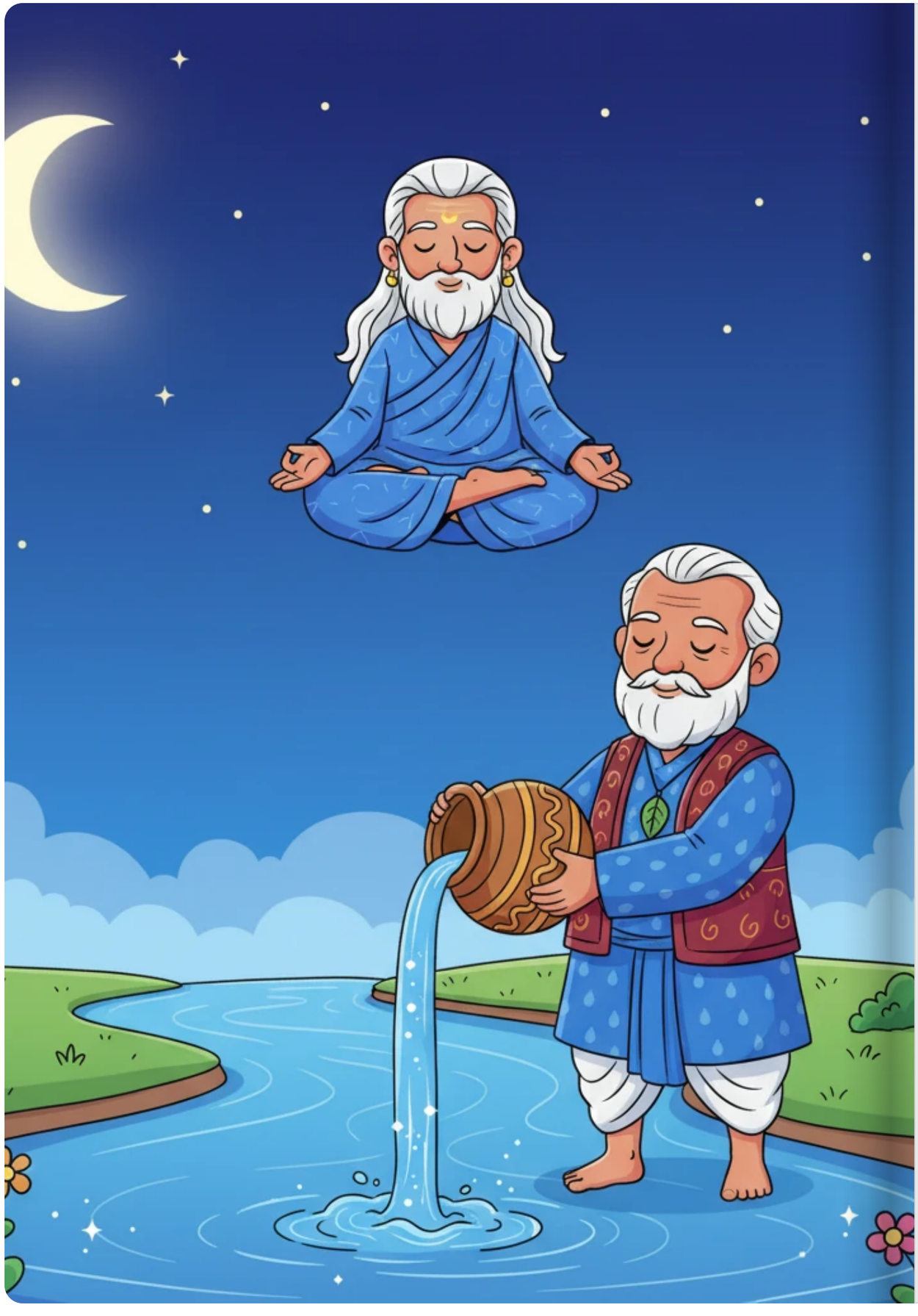

शांत आकाश, तारों से भरा, नीचे बहती नदी को देख रहा है, जह
जल का प्रवाह निरंतर जारी है। साधु आकाश ध्यानमग्न है, अपने ज्ञान क
गहराई में लीन, जबकि वृद्ध जल अपने कलश से जीवनदायी पानी बरस
रहा है। उनकी उपस्थिति से दुनिया में शांति और ज्ञान का अनुभव होता
जो जीवन के उत्तरार्ध की परिपक्वता और अंतर्दृष्टि को दर्शाता है।

अब पाँचों बच्चे अपने-अपने राज्यों और सिंहासनों पर गर्व से बैठे हैं, सभी एक पूर्ण चक्र में सामंजस्य स्थापित किए हुए हैं। प्रकृति माँ उन्हें आनंदित होकर मुस्कराती हुई देख रही हैं, उनका चेहरा संतुष्टि से चमक रहा है। यही है पंचतत्व का गहरा रहस्य - जब सब कुछ संतुलन में होता है, तो स्वास्थ्य आता है, और असंतुलन ही रोग को जन्म देता है।